International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

चलित माध्यमों में दृश्य संचार के विविध आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

विनोद सावंत[1], डॉ. राजेंद्र मोहंती[2], डॉ. नृपेन्द्र शर्मा[3]

[1]पी-एच.डी शोधार्थी, जनसंचार शोध केंद्र, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

[2]सहायक प्राध्यापक, जनसंचार विभाग, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

[3]सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता विभाग, कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सारांश:

प्रस्तुत शोध *"चलित माध्यमों में दृश्य संचार के विविध आयामों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"* विषय पर आधारित है। दृश्य संचार समकालीन संचार प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आयाम है जो चित्रों, प्रतीकों, रंगों, संकेतों तथा दृश्य संरचनाओं के माध्यम से संदेशों का प्रभावी संप्रेषण करता है। वर्तमान समय में विभिन्न चलित माध्यम, विशेष रूप से सड़क परिवहन वाहनों पर प्रयुक्त दृश्य तत्व, जनसंचार एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के प्रभावी साधन के रूप में उभरकर सामने आए हैं। यह अध्ययन चलित माध्यमों में प्रयुक्त दृश्य संचार के विविध स्वरूपों, उनकी विषयवस्तु तथा संचारात्मक का विश्लेषण करने के उद्देश्य से किया गया है।

अध्ययन में अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया। शोध के लिए छत्तीसगढ़ के प्रमुख राजमार्गों पर संचालित 100 ट्रकों का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया तथा उन पर अंकित चित्रों, प्रतीकों, रंगों, संदेशों एवं भाषायी अभिव्यक्तियों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार चलित माध्यमों में दृश्य संचार के अंतर्गत धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रेरणात्मक, सूचनात्मक एवं मनोरंजनात्मक विषयवस्तुओं का व्यापक समावेश पाया गया। ट्रकों पर अंकित संदेशों एवं प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक चेतना, धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक पहचान, जीवन-दर्शन तथा सड़क सुरक्षा संबंधी संदेशों का प्रभावी संप्रेषण है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि चलित माध्यमों पर प्रयुक्त दृश्य तत्व केवल सौंदर्यपरक भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जनसंचार, सांस्कृतिक संरक्षण एवं सामाजिक संदेशों के प्रसार के प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। रंगों, प्रतीकों तथा लिखित संदेशों का संयोजन दर्शकों का ध्यान आकर्षित कर संचार प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाता है। इस प्रकार चलित माध्यमों में दृश्य संचार बहुआयामी स्वरूप में विद्यमान है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यवहारिक संप्रेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन के निष्कर्ष से स्पष्ट होता है कि चलित माध्यम दृश्य संचार के प्रभावी एवं सशक्त साधन हैं, जिनके माध्यम से विविध प्रकार के संदेशों का व्यापक स्तर पर संप्रेषण संभव है। चलित माध्यमों में दृश्य संचार के विविध आयाम समकालीन जनसंचार अध्ययन के महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: दृश्य संचार, चलित माध्यम, ट्रक आर्ट, आयाम ।

प्रस्तावना

संचार मानव जीवन की एक अनिवार्य प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है। संचार के विविध रूपों में दृश्य संचार अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है। यह चित्रों, प्रतीकों, रंगों, संकेतों एवं दृश्य संरचनाओं के माध्यम से संदेशों का संप्रेषण करता है। दृश्य संचार की विशेषता यह है कि यह भाषायी सीमाओं से परे जाकर व्यापक जनसमूह तक सरलता एवं प्रभावशीलता के साथ संदेश पहुँचाने में सक्षम होता है। मानव सभ्यता के प्रारंभिक चरणों से वर्तमान समय में यह मुद्रित, इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल माध्यमों के साथ-साथ चलित माध्यमों में भी व्यापक रूप से दिखाई देता है।

चलित माध्यमों में दृश्य संचार का एक विशिष्ट एवं लोकप्रचलित स्वरूप ट्रक आर्ट (वाहन) है। भारतीय सड़कों पर संचालित ट्रकों के पीछे एवं बाहरी भागों पर अंकित चित्र, प्रतीक, धार्मिक संदेश, सूक्तियाँ, शायरी, सामाजिक संदेश एवं कलात्मक अभिव्यक्तियाँ न केवल वाहन सज्जा का कार्य करती हैं, बल्कि संचार के प्रभावी माध्यम के रूप में भी कार्य करती हैं। ट्रक आर्ट भारतीय लोक संस्कृति, सामाजिक मान्यताओं, धार्मिक आस्थाओं तथा क्षेत्रीय पहचान को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के संदेश प्रतिदिन लाखों लोगों तक पहुँचते हैं, जिससे यह जनसंचार की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है।

छत्तीसगढ़ अपनी समृद्ध जनजातीय संस्कृति, लोक कलाओं, प्राकृतिक संसाधनों एवं सांस्कृतिक विविधताओं के लिए प्रसिद्ध है। जहाँ से अनेक राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरते हैं। इन राजमार्गों पर संचालित ट्रकों में विविध प्रकार की ट्रक आर्ट देखने को मिलती है, जो स्थानीय संस्कृति, लोकविश्वास, सामाजिक मूल्यों एवं समकालीन विषयों को प्रतिबिंबित करती है। ट्रकों पर अंकित दृश्य सामग्री न केवल चालकों एवं वाहन स्वामियों की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि यह समाज में संदेशों के प्रसार एवं सांस्कृतिक संप्रेषण की महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाती दिखती है।

ट्रक आर्ट को लोक कला एवं सांस्कृतिक अध्ययन के दृष्टिकोण से अनेक शोधों में स्थान मिला है, तथापि इसे दृश्य संचार के परिप्रेक्ष्य में विशेषकर छत्तीसगढ़ के राजमार्गों के संदर्भ में अपेक्षाकृत कम अध्ययन किया गया है। इसी शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध "चलित माध्यमों में दृश्य संचार के विविध आयामों का विश्लेषण" पर केंद्रित है।

शोध के उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ के राजमार्गों पर ट्रक आर्ट के स्वरूप का अध्ययन करना।

परिकल्पना

H1. छत्तीसगढ़ के राजमार्गों पर संचालित ट्रकों में ट्रक आर्ट के विविध स्वरूप विद्यमान हैं, जिनमें धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं सूचनात्मक विषयवस्तुओं का प्रमुख स्थान है।

H0. छत्तीसगढ़ के राजमार्गों पर संचालित ट्रकों में ट्रक आर्ट के स्वरूप में कोई महत्वपूर्ण विविधता नहीं पाई जाती।

साहित्य समीक्षा

ट्रक आर्ट को दृश्य संचार का एक प्रभावी लोकमाध्यम माना जाता है, जिसके माध्यम से रंगों, प्रतीकों, चित्रों, टाइपोग्राफी तथा संदेशों द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक अर्थों का संप्रेषण किया जाता है। इस विषय पर विभिन्न शोधकर्ताओं ने अध्ययन किए हैं, जो प्रस्तुत शोध के लिए आधार प्रदान करते हैं।

एन्ना श्मिड (2000) ने *"Truck Art as Arena of Contest"* में ट्रक आर्ट को सामाजिक एवं सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बताया। उनके अनुसार ट्रकों पर अंकित चित्र और संदेश चालक, कलाकार तथा समाज के मध्य संवाद स्थापित करते हैं तथा सामाजिक पहचान और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं।

हिना अली (2012) ने *"Visual Dialogues: Pakistani Truck Art – A Metaphoric Literacy"* में ट्रक आर्ट को दृश्य संवाद (Visual Dialogue) का माध्यम माना है। अध्ययन में पाया गया कि ट्रकों पर प्रयुक्त प्रतीक, चित्र एवं रंग कम साक्षरता वाले समाज में भी प्रभावी रूप से संदेश संप्रेषित करते हैं और सांस्कृतिक ज्ञान को संरक्षित रखते हैं।
एरिक कोहेन (2013) ने *"Bus Paintings in Thailand: A Post-Modern Urban Art Form in Comparative Perspective"* में चलित माध्यमों पर की गई चित्रकारी को आधुनिक दृश्य संस्कृति का अंग माना है। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि वाहन केवल परिवहन का साधन नहीं, बल्कि दृश्य संचार और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के मंच भी हैं।
अतिका अमोन्कर (2017) ने भारतीय ट्रक कला में प्रयुक्त चित्रों, संकेतों तथा टाइपोग्राफी का अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला कि ट्रकों पर अंकित शायरी, सूक्तियाँ एवं संकेत सामाजिक और सांस्कृतिक संदेशों के संप्रेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आशिमा मदान (2018) ने *"Visual Semiotics of Truck Art in India: From Art on Trucks to a Digital Art Style"* में भारतीय ट्रक कला का अध्ययन दृश्य संकेत-विज्ञान (Visual Semiotics) के आधार पर किया। अध्ययन में ट्रक आर्ट में प्रयुक्त प्रतीकों, चित्रों और रंगों के माध्यम से संप्रेषित सांस्कृतिक एवं सामाजिक अर्थों का विश्लेषण किया गया। शोध में ट्रक आर्ट को एक महत्वपूर्ण दृश्य संचार माध्यम माना गया है।

समीना जिया शेख (2019) ने *"Impact of Truck Art as Popular Culture on Pakistani Society"* में ट्रक आर्ट को लोकप्रिय संस्कृति तथा दृश्य संचार का प्रभावी माध्यम माना है। उनके अनुसार ट्रक आर्ट के माध्यम से विचार, भावनाएँ, आस्थाएँ और सामाजिक अनुभव दृश्य रूप में अभिव्यक्त होते हैं।

कविश संघराज एवं सहयोगियों (2020) द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट *"Sajawat: A Study of Truck Art in India"* में भारतीय ट्रक कला को धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं सामाजिक प्रतीकों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। अध्ययन में ट्रक आर्ट को एक संगठित दृश्य संचार प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

फातिमा जारा (2021) ने *"Visual Rhetoric: Framing the Methodology for Truck Visuals Through Visual Rhetoric Theory and Rhetorical Appeals"* में ट्रक ग्राफिक्स की संचारात्मक प्रभावशीलता का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि ट्रकों पर अंकित दृश्य तत्व केवल सजावटी नहीं, बल्कि प्रभावी संचारक के रूप में कार्य करते हैं।

मोहम्मद आदिल खान एवं अबुल काशेम (2021) ने *"Horn Please: Aesthetics of Moving Truck in India and Bangladesh"* में भारतीय और बांग्लादेशी ट्रकों की कला एवं चित्रकारी के बदलते स्वरूप का अध्ययन किया। शोध में बताया गया कि ट्रक कला किसी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान और जीवन शैली को अभिव्यक्त करती है।

इयो मेन्सा एवं बेंजामिन न्योंग (2022) ने *"Visual Representation on Nigerian Trucks: A Semiotic Study"* में पाया कि ट्रक चालक एवं मालिक अपने वाहनों को सार्वजनिक दृश्य मंच के रूप में उपयोग करते हैं, जिसके माध्यम से वे व्यक्तिगत, धार्मिक और सामाजिक विचारों को व्यक्त करते हैं।

शोध सीमा

1. अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु रायपुर के राजमार्गों पर आवागमन करने वाले विभिन्न राज्यों के ट्रकों की छायाचित्र ली है।
2. शोध में तीन मार्ग के अनुसार चार दिशा तय की गई है।
3. केवल ट्रकों के पीछे के भाग के दृश्य संचार को अध्ययन में लिया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि पर आधारित है। डेटा संकलन के अंतर्गत 53 NH, 30NH, 130B मार्गों का चयन किया गया है। जो चार दिशा (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) के अनुसार 100 से ट्रक के पीछे के संकेत एवं लिखित संदेशों का संग्रह किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य ट्रक आर्ट में निहित विभिन्न दृश्य संदेशों, प्रतीकों एवं विषयवस्तुओं की पहचान करना तथा दृश्य संचार के माध्यम के रूप में उनकी भूमिका का विश्लेषण करना है।

अध्ययन की विधि

- अंतर्वस्तु विश्लेषण

नमूना

- कुल उत्तरदाता – 100
- क्षेत्र – 53 NH, 30NH, 130B मार्गों जिसे चार दिशा का अनुसार विभाजित कर ट्रकों की फोटो ली गई है।
- चयन – ट्रकों का उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम चुनाव किया गया है।

आकड़ों का विश्लेषण-

सारणी 1 : राज्यवार ट्रकों का वर्गीकरण

क्रमांक	**राज्य**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत (%)**
1	छत्तीसगढ़	52	52.0
2	राजस्थान	7	7.0
3	मध्यप्रदेश	8	8.0
4	ओडिशा	3	3.0
5	महाराष्ट्र	8	8.0
6	उत्तर प्रदेश	6	6.0
7	नई दिल्ली	1	1.0
8	हरियाणा	2	2.0
9	नागालैंड	1	1.0
10	बिहार	1	1.0

11	पश्चिम बंगाल	5	5.0
12	पंजाब	2	2.0
13	गुजरात	3	3.0
14	तेलंगाना	1	1.0
	कुल	100	100.0

सारणी 2 : ट्रकों पर अंकित संदेशों का वर्गीकरण

क्रमांक	संदेश का प्रकार	आवृत्ति
1	देशभक्ति	8
2	सामाजिक	9
3	राजनीतिक	1
4	व्यंग्यात्मक एवं नैतिक	8
5	दार्शनिक	4
6	सूचनात्मक	6
7	धार्मिक	7
8	चेतावनी	1
9	प्रेरणादायक	12
10	सांस्कृतिक	7
11	आशीर्वचन	8
12	जीवन-अनुभव	18
13	अन्य	6

सारणी 3 : ट्रकों पर लिखित शब्दों का वर्गीकरण

क्रमांक	**शब्द**	**आवृत्ति**
1	OK	30
2	STOP	40
3	BLOW HORN	22
4	कंपनी नाम	9
5	परिवहन कंपनी नाम	8
6	व्यक्तिगत नाम	15
7	मोबाइल नंबर	16
8	SPEED 40 KM	25
9	AWAZ DO	12
10	AWAZ KARO	11
11	डाक पार्सल	7
12	LONG VEHICLE	6

13	KEEP DISTANCE	9
14	WAIT FOR SIDE	10
15	GOOD LUCK	11
16	HORN PLEASE	25
17	ALL INDIA PERMIT	16
18	USE DIPPER AT NIGHT	14
19	अन्य	6

शोध कार्य के लिए आंकड़ों का विश्लेषण होना आवश्यक है, आंकड़ों के विश्लेषण के बिना हम उचित परिणाम तक नही पहुँच सकते हैं। आंकड़ों के माध्यम से ही हमें अपने परिणाम तक पहुँचते हैं।
शोध में छत्तीसगढ़ के राजमार्गों पर संचालित 100 ट्रकों का अवलोकन किया गया। ट्रकों पर अंकित संदेशों, प्रतीकों, चित्रों, रंगों एवं भाषाओं का विषयवस्तु विश्लेषण किया गया। अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि ट्रक आर्ट अनेक स्वरूपों में अभिव्यक्त होती है तथा उसमें धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं मनोरंजनात्मक तत्वों का समावेश पाया जाता है।

संदेशों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि ट्रकों पर जीवन-अनुभव (18), प्रेरणादायक (12), सामाजिक (9), देशभक्ति (8), व्यंग्यात्मक एवं नैतिक (8), धार्मिक (7) तथा सांस्कृतिक (7) संदेश अंकित पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि ट्रक आर्ट केवल सजावटी कला नहीं है, बल्कि यह चालक एवं मालिक के अनुभवों, विचारों, सामाजिक चेतना तथा सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।

प्रतीकों एवं चित्रों के विश्लेषण से धार्मिक स्वरूप की प्रमुखता दिखाई देती है। ट्रकों पर ॐ, स्वास्तिक, त्रिशूल, शिवलिंग, गणेश, शिव तथा नंदी आदि धार्मिक प्रतीकों का अंकन पाया गया। इसके अतिरिक्त भारत का राष्ट्रीय ध्वज, कलश, नमस्ते करती महिला, कबूतर, फूल, पत्तियों की लड़ियाँ तथा अन्य पारंपरिक आकृतियाँ सांस्कृतिक स्वरूप को प्रदर्शित करती हैं। यह भारतीय लोकसंस्कृति एवं धार्मिक विश्वासों के प्रभाव को दर्शाता है।
सूचनात्मक एवं सौंदर्यात्मक स्वरूप के अंतर्गत रंगीन गोले, तारे, फूल, दिल के चिन्ह, समुद्र एवं नारियल की पेंटिंग, चौखट डिज़ाइन तथा अन्य सजावटी आकृतियों का व्यापक प्रयोग पाया गया। साथ ही पीला (66), सफेद (54), लाल (50) तथा नीला (50) रंग सर्वाधिक प्रयुक्त हुए। इन रंगों एवं डिजाइनों का उद्देश्य वाहन को आकर्षक बनाना तथा दर्शकों का ध्यान आकर्षित करना है।

ट्रकों पर लिखे गए शब्दों जैसे "STOP", "OK", "HORN PLEASE", "BLOW HORN", "WAIT FOR SIDE", "KEEP DISTANCE" तथा "USE DIPPER AT NIGHT" से यह स्पष्ट होता है कि ट्रक आर्ट दृश्य संचार का भी प्रभावी माध्यम है। ये शब्द सड़क सुरक्षा, यातायात अनुशासन एवं वाहन चालकों के बीच संचार स्थापित करने का कार्य करते हैं।
भाषायी विश्लेषण में हिंदी भाषा का प्रयोग सर्वाधिक (55) पाया गया, जबकि अंग्रेजी (42) तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रयोग देखा गया। यह ट्रक आर्ट की बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक प्रकृति को दर्शाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के राजमार्गों पर संचालित ट्रकों में प्रयुक्त दृश्य संचार के विविध आयामों का विश्लेषण करना था। अध्ययन में ट्रकों पर अंकित संदेशों, प्रतीकों, चित्रों, रंगों तथा भाषायी अभिव्यक्तियों का विषयवस्तु विश्लेषण किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ट्रक आर्ट केवल सजावटी कला नहीं है, बल्कि यह एक प्रभावी दृश्य संचार माध्यम के रूप में कार्य करती है। चयनित 100 ट्रकों पर प्रदर्शित संदेशों, प्रतीकों, चित्रों, रंगों एवं भाषायी अभिव्यक्तियों का व्यवस्थित अवलोकन किया गया। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि ट्रक आर्ट एक बहुआयामी दृश्य संचार माध्यम के रूप में कार्य करती है, जिसमें धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा मनोरंजनात्मक तत्वों का समन्वित स्वरूप परिलक्षित होता है।

अध्ययन में ट्रकों पर अंकित संदेशों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि जीवन-अनुभव, प्रेरणादायक, सामाजिक, देशभक्ति, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सूचनात्मक विषयवस्तुएँ प्रमुख रूप से अभिव्यक्त हुई हैं। यह तथ्य इंगित करता है कि ट्रक आर्ट केवल वाहन-सज्जा तक सीमित न होकर चालक एवं वाहन स्वामी के जीवन-दर्शन, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों तथा व्यक्तिगत अनुभवों की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम है।

इसी प्रकार प्रतीकों एवं चित्रों के विश्लेषण से धार्मिक स्वरूप की उल्लेखनीय प्रधानता परिलक्षित हुई। ॐ, स्वास्तिक, त्रिशूल, गणेश, शिव तथा अन्य धार्मिक प्रतीकों का व्यापक प्रयोग भारतीय समाज में विद्यमान धार्मिक आस्था एवं सांस्कृतिक परंपराओं के प्रभाव को प्रदर्शित करता है। साथ ही राष्ट्रीय ध्वज, कलश, पुष्पीय आकृतियाँ तथा अन्य पारंपरिक चित्रांकन भारतीय लोक-संस्कृति के प्रतिनिधि रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न सजावटी आकृतियों एवं रंग-संयोजनों का प्रयोग ट्रक आर्ट के सौंदर्यपरक एवं मनोरंजनात्मक स्वरूप को सुदृढ़ करता है।

ट्रकों पर अंकित शब्दों एवं वाक्यांशों जैसे 'STOP', 'HORN PLEASE', 'BLOW HORN', 'KEEP DISTANCE' तथा 'USE DIPPER AT NIGHT' से यह भी स्पष्ट होता है कि ट्रक आर्ट दृश्य संचार के एक व्यवहारिक माध्यम के रूप में सड़क सुरक्षा, यातायात अनुशासन तथा वाहन चालकों के मध्य संप्रेषण की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छत्तीसगढ़ के राजमार्गों पर संचालित ट्रकों में ट्रक आर्ट के विविध एवं बहुआयामी स्वरूप विद्यमान हैं, जिनमें धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं सूचनात्मक विषयवस्तुओं का प्रमुख स्थान है।

अतःशोध अध्ययन के निष्कर्ष शोध की वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) का समर्थन करते हैं तथा शून्य परिकल्पना (H_0) को अस्वीकार करते हैं।

सुझाव

1. चलित माध्यमों को दृश्य संचार के प्रभावी साधन के रूप में उपयोग करते हुए सड़क सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं सामाजिक जागरूकता संबंधी संदेशों का व्यापक प्रसार किया जाना चाहिए।
2. ट्रक आर्ट में स्थानीय लोककला, जनजातीय संस्कृति तथा क्षेत्रीय सांस्कृतिक प्रतीकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे स्थानीय सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ बनाया जा सके।
3. भविष्य में बसों, ऑटो-रिक्शा, टैक्सियों एवं अन्य चलित माध्यमों में प्रयुक्त दृश्य संचार तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए, जिससे दृश्य संचार के व्यापक आयामों को समझा जा सके।
4. सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा चलित माध्यमों को जन-जागरूकता अभियानों के लिए अधिक व्यवस्थित रूप से उपयोग किया जाना चाहिए, क्योंकि ये संदेशों को व्यापक जनसमूह तक पहुँचाने की क्षमता रखते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. Ali, H. (2012). *Visual dialogues: Pakistani truck art "A metaphoric literacy"* (Master's thesis, Central Saint Martins College of Art and Design, University of the Arts London).
2. Amonker, A. (2017). *Indian truck art*. The Four Legged Crow.
3. Cohen, E. (2013). Bus paintings in Thailand: A post-modern urban art form in comparative perspective. *ASEAS – Austrian Journal of South-East Asian Studies, 6*(2), 242–263.
4. Khan, M. A., & Kashem, A. (2021, May). *Horn please: Aesthetics of moving truck in India and Bangladesh* [Conference paper]. Anthropology of Aesthetics Seminar, Budapest, Hungary, Eötvös Loránd University.
5. Madan, A. (2018). *Visual semiotics of truck art in India: From art on trucks to a digital art style* (Master's thesis, University College Dublin).
6. Mensah, E., & Nyong, B. (2022). Visual representation on Nigerian trucks: A semiotic study. *Semiotica*. De Gruyter Mouton.
7. Sanghrajka, K. (2020). *Sajawat: A study of truck art in India*. Discover India Program, FLAME University.
8. Schmid, A. (2000). Truck art as arena of contest. *Journal of Social Sciences, 4*(4), 235–241.
9. Sheikh, S. Z. (2018). Impact of truck art as popular culture on Pakistani society. *International Journal of Multidisciplinary and Current Research, 6*(5), 1061–1062.
10. Zahra, F. (2021). Visual rhetoric: Framing the methodology for truck visuals through visual rhetoric theory and rhetorical appeals. *International Journal of Innovation, Creativity and Change, 15*(9), 409–412.